शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सह–सम्बन्ध का अध्ययन

*डॉ. रीना जैन
**प्रीति जैन

सार संदर्भ

पिछले कई वर्षों से देखने एवं पढ़ने को मिलता है कि अध्यापकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में परिवर्तन आया है और लोग केवल सेवा (नौकरी) पाने के लिए अध्यापन क्षेत्र के व्यवसाय का चयन करते हैं। इसलिए शिक्षक सामान्यतया शिक्षण व्यवसाय के प्रति निरूत्साहित होते हैं। (कार्य में नकात्मक अभिवृत्ति) एक शोध की रिर्पोट में लिखा था कि शिक्षक अपनी परिस्थितियों से अधिक दबावग्रस्त और निरूत्साहित होते हैं। (लिट और ट्रक, 1985)[8] इसलिए शिक्षकों में व्यावसायिक अभिवृत्ति में सुधार हेतु शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एक महत्वपूर्ण कारक है? कैसे एक अध्यापक अपने शिक्षक होने का दायित्व पूर्ण करता है। जबकि उसकी कुछ सीमायें होती है, जैसे उसकी शिक्षण में आस्था, विश्वास, मूल्य एवं अभिवृत्ति आदि। एक सकारात्मक अभिवृत्ति अध्यापक को न केवल उसके कार्य को सुगमता प्रदान करती है बल्कि उसे और अधिक सन्तुष्ट और व्यावसायिक पारितोषिक भी प्रदान करती है। परन्तु एक नकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षक के कार्य को और अधिक कठिन, थकावट वाला और बेमजा बना देती है। एक अध्यापक की अभिवृत्ति उसके विद्यार्थियों की अधिगम प्रभावशीलता और क्रियाशीलता के भाग को भी प्रभावित करती है। शोध प्रत्र के माध्यम से शोधार्थी नेशिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में सह–सम्बन्ध और विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया है।

प्रस्तावना

पिछले अनेक वर्षों में शिक्षकों की सामाजिक गरिमा में निरन्तर ह्रास हुआ है। उसकी मौलिक भूमिका संदेह के घेरे में है। शिक्षकों पर यह आरोप आम बात हो गई है कि शिक्षक कक्षाओं में जाने से भी कतराने लगे हैं। कक्षा में उनकी अनुपस्थिति में निरन्तर वृद्धि हो रही है, उन्हें अपने विद्यार्थियों के भविष्य में कोई रूचि नहीं है। इस सम्बन्ध में डा. भानू प्रकाश का कथन समसामयिक है जो इस प्रकार है– "शिक्षक को आज उच्च वेतनभोगी एक ऐसा कर्मचारी बताया जाता है, जिसके काम के घण्टे कम हैं और वह छुट्टियों का भी सबसे अधिक आनन्द लेता है, ऐसे ही अनेक आरोपों की आवाज में शिक्षक प्रतिबद्धता पर प्रश्नचिन्ह लगता है। साथ ही उसकी कर्त्तव्यनिष्ठा भी संदिग्ध हो गई है। डा. शर्मा[2] का यह आरोप कोई साधारण आरोप नहीं है, बल्कि यह एक गम्भीर सवाल है जिसके उत्तर पर राष्ट्र का भविष्य अर्थात आने वाली पीढ़ियों का जीवन निर्भर है। इसके लिए शिक्षकों को अपने शिष्यों के साथ मानवीय संबंध बनाने की आवश्यकता है ताकि उनका उचित सर्वांगीण विकास हो सके।

शिक्षक विद्यालय सगंठन की धुरी है जैसा स्वरुप शिक्षक का होगा वैसा ही स्वरुप विद्यालय का होगा। यदि प्राचार्य विद्यालय सगंठन नाड़ी संस्थान का मस्तिष्क है तो शिक्षक उस संस्थान की नाड़ी है जो स्वयं के मस्तिष्क के आदेशानुसार ठीक ढगं से काम करता है। इसीलिए प्रो. टी. रेमण्ट ने कहा है कि ''योजना चाहे कितनी व्यापक क्यों न हो विद्यालय भवन कितना ही भव्य क्यों न हो, पाठ्यक्रम कितना उपयोगी क्यों न हो, जब तक उस योजना को क्रियान्वित करने वाले अध्यापक सुयोग्य न हो, तब तक योजना उसी प्रकार निरर्थक सिद्ध होगी। जिस प्रकार अनाड़ी के हाथों में एक यंत्रे की स्थिति होती है।

शिक्षक एक ऐसे दीपक की ज्योति के समान है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशमान करता हुआ अंधकार को दूर करता है। ज्ञानरूपी उजाला जो कि मानवता के मार्ग को प्रकाशमान करता है व अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करता है। इसलिये उसके नैतिक कर्तव्य व इन कर्तव्यों में उसकी निष्ठा ही उसे शिक्षक होने का गौरव प्रदान करती है। शिक्षक का व्यवहार उदार, सच्चरित्र, सहयोगी, सहिष्णु व दयालु होता है। यदि अध्यापक में इन गुणों का अभाव होता है तो वह उस गौरव के योग्य नहीं रह पाता अतः अध्यापक को सदैव अपना आचरण श्रेष्ठ रखना चाहिये। इसलिये किसी समाज, राष्ट्र का हित, विकास उसके अध्यापक पर निर्भर करता है। गुरू अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के द्वारा ज्ञान देता है। गुरू शिक्षा के माध्यम से छात्रों के व्यवहार को परिवर्तित करके समाज के लिये उपयोगी बनाता है अर्थात् गुरू के बिना ज्ञान संभव नहीं है। गुरू ही छात्रों का समय–समय पर अपने व्यवहार ज्ञान, अनुभव के माध्यम से मार्ग प्रदर्शन करता है।व्यवसाय के प्रति पूर्ण समर्पण भावना एवं अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को व्यवसाय में समर्पित कर देने की तत्परता ही व्यावसायिक प्रतिबद्धता कहलाती है। प्रतिबद्ध व्यक्ति अपना कार्य करके संतोष का अनुभव करते हैं। यह कार्य वे अपनी उत्तम क्षमता से करते हैं एवं किसी कार्य के सम्पन्न न होने पर पूरा दायित्व स्वयं स्वीकार करते हैं। उनमें कार्य के प्रति अच्छी मनोवृत्ति होती है एवं अपने आस–पास कार्य करने वाले व्यक्तियों पर भी अपना प्रभाव डालते हैं। वे सदैव अपने कार्य को कुशल, नवीन एवं अलग ढंग से करते रहते हैं। वे ऐसा इसलिए नहीं करते कि उन्हें ऐसा करने के लिए कहा जाता है बल्कि इसलिए कि भविष्य में उनके कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके।

व्यावसायिक मूल्य

व्यावसायिक मूल्य ऐसे सिद्धांत हैं जो किसी नागरिक के श्रम और शैक्षिक विकास से जुड़े निर्णयों का मार्गदर्शन करते हैं। यह उम्मीद की जाती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य में सक्षम हो और अपने सहयोगियों और कार्य स्थल के वातावरण के प्रति सम्मानपूर्ण हो।

- व्यावसायिक समायोजन
- व्यावसायिक निष्ठा
- व्यावसायिक समायोजन
- व्यावसायिक गौरव

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। नव अनुसंधानकर्त्ता को इसके महत्त्व को पहचानना चाहिए क्योंकि सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है। कुछ लोग अनुसंधान क्रिया का प्रारम्भ, उपकरण के निर्माण एवं दत्त सामग्री के संकलन को समझते हैं। किन्तु यह गलत है कि किसी भी प्रकार के

अनुसंधान के साहित्य का पुनरावलोकन अनिवार्य और प्रारम्भिक कदम है। अनुसंधानकर्त्ता को यह ज्ञान होना चाहिए कि पूर्व अनुसंधानों में किस विधि से काम लिया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या रहे। तब तक वह सामान्य निर्धारण नहीं कर सकता और न ही उसकी रूप रेखा तैयार कर सकता है। अतः शोध कार्य की सफलता के लिए सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन अपरिहार्य है।

इस अध्याय में शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्य से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया है। शोध अध्ययन का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है।

सूद एवं आनन्द, (2010)[90] ने हिमाचल प्रदेश के शिक्षक प्रशिक्षकों के मध्य उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन किया। परिणामों पाया कि लिंग, वैवाहिक स्थिति, अनुभव के सन्दर्भ में शिक्षक प्रशिक्षकों के मध्य उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर पाया गया। परन्तु राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण एवं राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा अनुत्तीर्ण शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर समान था।

आथवाला, (2011)[91] ने–''ग्रेटर मुम्बई के जुनियर कॉलेज के शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता तथा उनकी उद्विग्नता के साथ सम्बन्ध का अध्ययन'' में पाया कि व्यावसायिक प्रतिबद्धता और उद्विग्नता के आयामों में कोई सहसम्बन्ध नहीं पाया गया। शिक्षक प्रशिक्षकों में सन्तुलित व्यक्तित्व वालों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता उच्च पाई गई। शिक्षक प्रशिक्षकों में सांवेगिक थकान और व्यक्तिगत प्रवीणता में लैंगिक आधार पर अन्तर पाया गया।

देबोराह, (2011)[92] ने–''नवीं स्तर के विद्यालयों के विद्यालयों में अध्यापक प्रतिबद्धता का क्रियान्वयन और उनके विद्यालय नेतृत्व की अवधारणा'' के अध्ययन में पाया कि नेतृत्व का प्रभाव, कार्य सन्तुष्टि और वचनबद्धता पर सार्थक प्रभाव डालता है। प्रभावी नेतृत्व अपने दोनों रूपों में वचनबद्धता में परिवर्तन करता है और यह भी बताया कि वचनबद्धता अपने दोनों रूप में नेतृत्व को प्रभावित करती है।

हरियट, (2011)[93] ने–''विभिन्न सफलता दरों के साथ अध्यापकीय दबाव, प्रतिबद्धता और विद्यालय में विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन'' में पाया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों में दबाव के स्रोत एवं स्तर में समानता पाई गई। जबकि जो अध्यापक उच्च अंकों से मैट्रिक पास हुये वे वचनबद्धता तथा विद्यालय के सहयोगी, कम अंकों से मैट्रिक पास अध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर के पाये गये। अध्यापकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता और संगठनात्मक वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

सूद और आनन्द, (2012)[94] ने–''हिमाचल प्रदेश के बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता'' शोध के निष्कर्ष में पाया कि (1) महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। (2) हिमाचल प्रदेश के शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर कारक जैसेः लिंग, वैवाहिक स्थिति और शिक्षण अनुभव का औसत प्रभाव पाया गया।

युसुफ (2012)[95] ने–''विद्यालयी वातावरण और अध्यापक प्रतिबद्धता : पेनांग (मलेशिया) में एक अध्ययन।'' में पाया कि जिन विद्यालयों में खुला (स्वतन्त्र) वातावरण है उनके अध्यापकों की सम्पूर्ण प्रतिबद्धता उच्च स्तर की पाई गई। विद्यालयी वातावरण के सम्पूर्ण आयामों से शिक्षक प्रतिबद्धता से सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। अन्य विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण और अध्यापक प्रतिबद्धता में निम्न स्तर का सहसम्बन्ध पाया गया।

विजया (1996)[97] ने अपना शोध सैकेन्डरी स्कूल के शिक्षकों और शैक्षिक बिन्दुओं पर उनकी अभिवृत्ति के मूल्यों के लगाव पर किया तथा अध्ययन में पाया कि – शिक्षकों की अभिवृत्ति शिक्षा के प्रति धनात्मक थी।, व्यावसायिक एवं प्रगतिशील मूल्य शिक्षकों में सर्वोपरि था, साथ ही बोलचाल एवं शुद्धता के सार्थक एवं निम्न सहसम्बन्ध प्रदर्शित

हुआ।, बुद्धि के मौखिक एवं लिखित परीक्षण में सार्थक सहसम्बन्ध था।

श्याम (2000)[98]– ''ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ टीचिगं वैल्यजू अमागं मेल एण्ड फीमेल टीचर्स ऑफ तामिलनाडू, का अध्ययन किया। अध्ययन पाया कि महिला शिक्षिकाओं व पुरूष अध्यापकगणों के शिक्षण मूल्यों में कोई विशेष अन्तर नहीं प्राप्त हुआ। महिला अध्यापकगणों में शिक्षण कार्य के समय विद्यार्थियों से आत्मीयता रखने की प्रवृत्ति पुरूष अध्यापकगणों की तुलना में अधिक पायी गई। पुरूष अध्यापकगणों में मार्ग दर्शन, आत्मविश्वास, सहयो आदि मूल्य महिला अध्यापकगणों की तुलना में अधिक पाये गये।

अग्रवाल (2001)[99], ने राजस्थान में विभिन्न प्रकार के शिक्षालयों के छात्रों के अनुशासन, आचरण तथा नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि विद्यालयी भिन्नता छात्राओं के व्यक्तित्व को प्रभावित नहीं करती है। विद्यालयी विभिन्नता का प्रभाव छात्रों के आचरण व उनके नैतिक मूल्यों पर भी पड़ता है।

जस्टिन (2007)[100] –''एन एनालिसिस ऑफ वैल्यूज स्टीट्यूड एण्ड बिलीवस ऑफ मेल टीचर्स इन अर्ली चाइल्डहुड : ए बेसिस फॉर डवलपिंग रिक्रटूमेन्ट एण्ड रिटेंशन स्ट्रेटेजीज'' के अध्ययन में पाया कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा में पुरूषों की भर्ती के पश्चात् महिला अध्यापकगणों की इस सन्दर्भ में नकारात्मक मनोभाव देखी गयी। महिला अध्यापकगणों के अनुसार पूर्व प्राथमिक शिक्षा में केवल महिलाएँ ही सफल हो सकती है। पुरूष अध्यापकगणों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा में महिलाओं का अपेक्षित सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। समय की उपलब्धता व रोजगार के अवसरों में कमी ने पुरूषों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा को करियर के रूप में अपनाने हेतु प्रेरित किया। पूर्व प्राथमिक शिक्षा को केरियर के रूप में अपनाने पर पुरूष अध्यापकगणों का दर्शन, शिशुओं व शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक प्रभाव देखा गया। अधिकांश पुरूष शिक्षक अपने वेतन से सन्तुष्ट नहीं पाये गये।

तिवारी, (2007)[101] ''प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन'' में पाया कि –विद्यालयी दण्ड व अन्याय बच्चों के विकास को अवरूद्ध कर देता है। इस बात पर शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मत में सार्थक अन्तर पाया गया। 2. विद्यालय में पिटाई एवं टोका–टाकी से बच्चे नहीं सुधरते बल्कि अधिक असामाजिक बनते हैं। इस बात पर भी शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। 3. विद्यालय में बच्चों को वह बताया जाए, जो बच्चे जानना चाहते हैं। इस बात पर भी शिक्षक–शिक्षिकाओं के मत में सार्थक अन्तर पाया गया।

गुप्ता (2009)[102] – ''ए स्टडी ऑफ वेल्यूज अमंग स्कूल प्रिंसिपल्स, देयर एटीट्यूड टूवर्डस माडर्नाइजेशन एण्ड इट्स रिलेशनशिप विद द ऑर्गेनाईजेशनल क्लाइमेट'' में पाया कि पब्लिक स्कूल और राजकीय शिक्षालयों में मूल्यों के सामान्य एवं आयामीय दृष्टिकोण से सकारात्मक प्रवृत्ति प्राप्त हुई। दोनो ही प्रकार के शिक्षालयों के प्रधानाचार्यों की आधुनिकता के प्रति सकारात्मक प्रवृत्ति प्राप्त हुई। पब्लिक स्कूल एवं राजकीय शिक्षालयों के पर्यावरण में सार्थक अन्तर नही प्राप्त हुआ। पब्लिक स्कूलों में नियंत्रित पर्यावरण प्राप्त हुआ जबकि राजकीय शिक्षालयों में पारिवारिक पर्यावरण प्राप्त हुआ। पब्लिक स्कूल एवं राजकीय शिक्षालयों में मूल्य और संगठनात्मक पर्यावरण के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं प्राप्त हुआ। पब्लिक स्कूल एवं राजकीय शिक्षालयों में आधुनिकता और संगठनात्मक पर्यावरण के मध्य सार्थक सम्बन्ध नही प्राप्त हुआ। पब्लिक स्कूल एवं राजकीय शिक्षालयों में मूल्य और आधुनिकता के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं प्राप्त हुआ।

हालबर्ट (2009)[103] – ''हिस्टरी टीचिंग एण्ड द वैल्यू एजेण्डा'' पाया कि इतिहास के अध्यापकगणों द्वारा अपनी शिक्षण व्यूह रचना में प्रजातांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय के समर्थन व स्थापना पर जोर दिया गया। अध्यापकगणों एवं छात्रों के मध्य होने वाली परिचर्चाओं में प्रजातांत्रिक मूल्यों का ध्यान रखा गया।

गौड़ (2010)[104] ने अपने अध्ययन ''स्ववित्त अध्यापक–संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभिवृत्ति, आत्म प्रत्यय

एवं जीवन मूल्यों पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रभाव'' में पाया कि ऐसे प्रशिक्षणार्थी जिन्हें प्रशिक्षण से पूर्व कोई शिक्षण अनुभव नहीं है अथवा शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूचि नहीं रखते, उनमें सकारात्मक शिक्षण अनुभव नहीं है अथवा शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूचि नहीं रखते, उनमें सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति कम मात्रा में पाई गई। पुरूषों की तुलना में महिला प्रशिक्षणार्थियों में सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति अधिक मात्रा में पाई गई।

अध्ययन के उद्देश्य

- शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

अध्ययन योजना एवं प्रक्रियाएँ

इस शोध अनुसंधान एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। जिसके द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण कर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। रेडमेन एवं अन्य (2010)[1] के अनुसार ''नवीन ज्ञान प्राप्ति हेतु व्यवस्थित प्रयास ही अनुसंधान है।'' शोध अनुसंधान के अन्तर्गत सम्बन्धित चरों तथा घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि द्वारा किया जाता है। शोध अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि के प्रयोग पर कार्लपिर्यसन ने लिखा है ''सत्य के लिए संक्षिप्त मार्ग नहीं है विश्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक विधि के मार्ग से गुजरना पड़ता है।''

न्यादर्श

इन विद्यालयों से यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा भीलवाडा जिले के 10 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। दिये गये जनसंख्या में से न्यादर्श यादृच्छिक विधि द्वारा 150 शिक्षकों का चयन किया गया। प्रत्येक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय से 15–15 शिक्षकों का चयन किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दत्त संकलन के लिए निम्ननिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

- शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति – डॉ. एस. पी. अहलुवालिया
- व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापनी – स्वनिर्मित
- शिक्षक व्यावसायिक मूल्य – डॉ. चेतना टेलर

परिकल्पनाएँ 1.

विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति के स्तर का अध्ययन

तालिका संख्या – 1 विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में सह–सम्बन्ध

समूह	संख्या ;छद्ध	सह–सम्बन्ध गुणांक कत्रि298
विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में सम्बन्ध	300	0.014 NS

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.4 को देखने पर स्पष्ट होता हैं कि विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध 0.014 पाया गया जो कि अतिन्यून स्तर का धनात्मक सह–सम्बन्ध है। स्वतंत्रता के अंश 298 ;कद्धि पर .05 तथा .01 विश्वास के स्तरों पर सार्थकता का सारणी मान क्रमशः .11 तथा .15 से कम है। अतः विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक सम्बन्ध नही होता है। उक्त परिणाम किसी भी अध्ययन के निष्कर्षों से पुष्टि नहीं करता है।

परिकल्पनाएँ 2.

विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सह–सम्बन्ध

तालिका संख्या–2 विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता मे सह–सम्बन्ध

समूह	संख्या (N)	सह–सम्बन्ध गुणांक कत्रि298
विद्यालयी शिक्षको की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सम्बन्ध	300	0.023 NS

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.6 से स्पष्ट है कि विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य सह–सम्बन्ध 0.023 पाया गया है जो कि अतिन्यून स्तर का धनात्मक सह–सम्बन्ध है। स्वतंत्रता के अंश 298 ;कद्धि

पर .05 तथा .01 विश्वास के स्तरों पर सार्थकता का सारणी मान क्रमशः .11 तथा .15 से कम है। अतः विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है कि **विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक सम्बन्ध नही होता हैं।** उक्त परिणाम की पुष्टि आंशिक रूप से गौड़ (2010) के शोध निष्कर्ष से होती है।

सारांश

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्यों में सार्थकता नहीं पाया गया है। किन्तु यह स्पष्ट है कि विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक मूल्य, व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य न्यून धनात्मक सह–सम्बन्ध है अतः विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत की जाती है।

***निर्देशिका**
****शोधार्थी**
स्कूल ऑफ एज्यूकेशन
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी
जयपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. मालवीय, राजीव– उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृ.सं. 154–155.
2. मेहरोत, आर.एन. (1973) : एफेक्ट ऑफ टीचर्स एजू. प्रोग्राम्स आन एटी. आफ टीचर्स टुवार्डस टीचिंग बीहेवियर, सी.आई. ई. नई दिल्ली, 1973, सेकेण्ड सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, पृष्ठ सं.438.
3. मण्डानकर, आर.आर. (2012) : ए स्टडी ऑफ पर्सनल वेल्यूज एण्ड जॉब सैटिस्फेक्शन ऑफ हाई स्कूल टीचर्स, इन्टरनेशनल इण्डेक्सडस रेफर्ड रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम–3 इश्यू–31, अप्रैल–2012.
4. मसिम, चंचल (1988) : टीचिंग एप्टीट्यूड एण्ड इट्स रिलेशनसिप विथ टीचिंग इफेक्टिवनेस ऑफ द हायर सेकण्डरी स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू द मार्डन कम्यूनिटी, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, पी.पी. 1437.
5. मित्तल, एम.एल. (1995) : प्रिंसीपलस् ऑफ एज्यूकेशन, ईगल बुक्स इण्टरनेशनल।
6. ओझा, डॉ. सुप्रभा (2013) : उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अन्य पिछड़ी जाति के बालक–बालिकाओं के मूल्यों व व्यावसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जनवरी–जून 2013, पृ. सं. 19–22.
7. राय, राकेश एवं राय, अनिता (2012) : ए स्टडी ऑफ वैल्यूज अंमग टैक्निकल टीचर्स वर्किंग इन प्राइवेट एण्ड गवर्नमेण्ट यूनिवर्टिज इन एन.सी.आर, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एण्ड रिसर्च पब्लिकेशन्स, वॉल्यूम– 2, इश्यू–8, अगस्त 2012.

8. रेड्डी, डी.बी. (2004): चित्तौड़ जिले के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मूल्यपरक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष 23, अंक 2 जुलाई–दिसम्बर 2004, पृ.सं. 25–29.

9. सैलन, ईलानी मैरी (1994) : अध्यापक की कार्य वचनबद्धता, आजीविका चुनाव वचनबद्धता तथा नियोजित अवधारणा की शुरूआत पर अनुभूत कार्य स्थल परिस्थितियों का प्रभाव, शिक्षा विभाग, कोलम्बिया युनिवर्सिटी टीचर कॉलेज, डिजट्रेशन एब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वोल्यूम–45, नम्बर–8, 1994, पृ. सं. 2989–ए।

10. सिंह, करनैल (2012) : शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति, शिक्षा विभाग, जम्मू कश्मीर, Vol.1; Issue-2; April.2012; pp-149.160.

11. श्याम, के. पी. (2000) : ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ टीचिंग वैल्यूज अमंग मेल एण्ड फीमेल टीचर्स ऑफ तमिलनाडू, तमिलनाडू खुला विश्वविद्यालय, चेन्नई।

12. त्रिपाठी, एम.के. (1978) : आरगानाइजेशन क्लाइमेट एण्ड टीचर एटीट्यूडः स्टडी ऑफ रिलेशनशिप, शो.प्र. एच. यु. बुच सर्वे (3) पृष्ठ सं. 510,

13. त्रिवेदी, रोहनी ए. (2012) : विभिन्न स्तर के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, कामेश्वर कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन, अहमदाबाद, Vol. 1; Issue-5 May 2012; pp.24.30.